

---

# Sanskritaseva Avashyaka Nivedana Brahmanom Se

---

संस्कृतसेवा आवश्यक निवेदन ब्राह्मणों से

---

## Document Information

---

Text title : Sanskritaseva Avashyaka Nivedana Brahmanom Se

File name : sanskRRitasevAAvashyakanivedanabrAhmaNoMse.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 19, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

संस्कृतसेवा आवश्यक निवेदन ब्राह्मणों से


---




ब्राह्मण भी संस्कृत छोड़ेंगे, नहीं कभी थी आशा,  
किन्तु देश को दुःख आपसे भीषण आज निराशा ।  
अरे, आपने भी संस्कृत की शिक्षा से मुँड मोड़ःा,  
वह सम्बन्ध युगों का कैसे धतनी जणी तोड़ःा ? । १  
अंग्रेज-शिक्षा का डोगा नहीं उचित अवरोध,  
किन्तु आपको आवश्यक है संस्कृत का भी बोध ।  
ब्राह्मण को भी संस्कृत का डो नहीं यथावत् ज्ञान,  
धससे बढःकर और लला क्या डोगा दोष मडान ? । २  
ऋषि-मुनियों ने जिस भाषा की भागीरथी बडाई,  
जिस निधि की रक्षा में अपनी सारी आयु बिताई ।  
उनके कुल की डी यह देखें कैसे करण कडानी,  
जहाँ सिन्धु था आज वहाँ पर नहीं बिन्दु भर पानी ? । ३  
कभी आपडे श्रीमुभ में था श्रुतियों का आवास,  
किन्तु आज सुर्ती-गाँजा का दुर्गन्धित उछवास ।  
बैठ कुशासन पर, कर में ले, दलों का समुदाय-  
कहाँ गया वह नियम उषा में करने का स्वाध्याय ? । ४  
अेक बार भी तो दुडरा हँ अब भी वह धतिडास,  
हिर से धस उजडःे मधुवन में लडराये मधुमास ।  
कण्ठ-कण्ठ से सामगान का तान मधुर हिर कूटे,  
अब से ऋषिकुल में सुरवाणी का मूढ तार न टूटे । ५  
- रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

---

——  
*Sanskritaseva Avashyaka Nivedana Brahmanom Se*  
pdf was typeset on May 19, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

